राजस्थान की प्रमुख सभ्यताएं

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की स्थापना → 1861

राज. में पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग " → 1871

- ✓ प्रागैतिहासिक काल → जहा लिखित साक्ष्य नही मिलते
- ✓ आद्यैतिहासिक काल → लिखा हुआ मिलता है पर पढा नही जासका
- ✓ ऐतिहासिक काल → लिखित साक्ष्य मिलते है।

आहड़ सभ्यता : उदयपुर

→ नदी → आयड़/बेड़च नदी के किनारे

→ उपनाम : आघाटपुर, बनास संस्कृति, धूलकोट, ताम्रनगरी

→ खोज → अक्षयकीर्ति व्यास – 1953

→ उत्खनन → एच. डी. सांकलीया

→ विस्तृत व्यापक उत्खनन → रत्न चन्द्र अग्रवाल

→ यह ग्रामीण सभ्यता है।

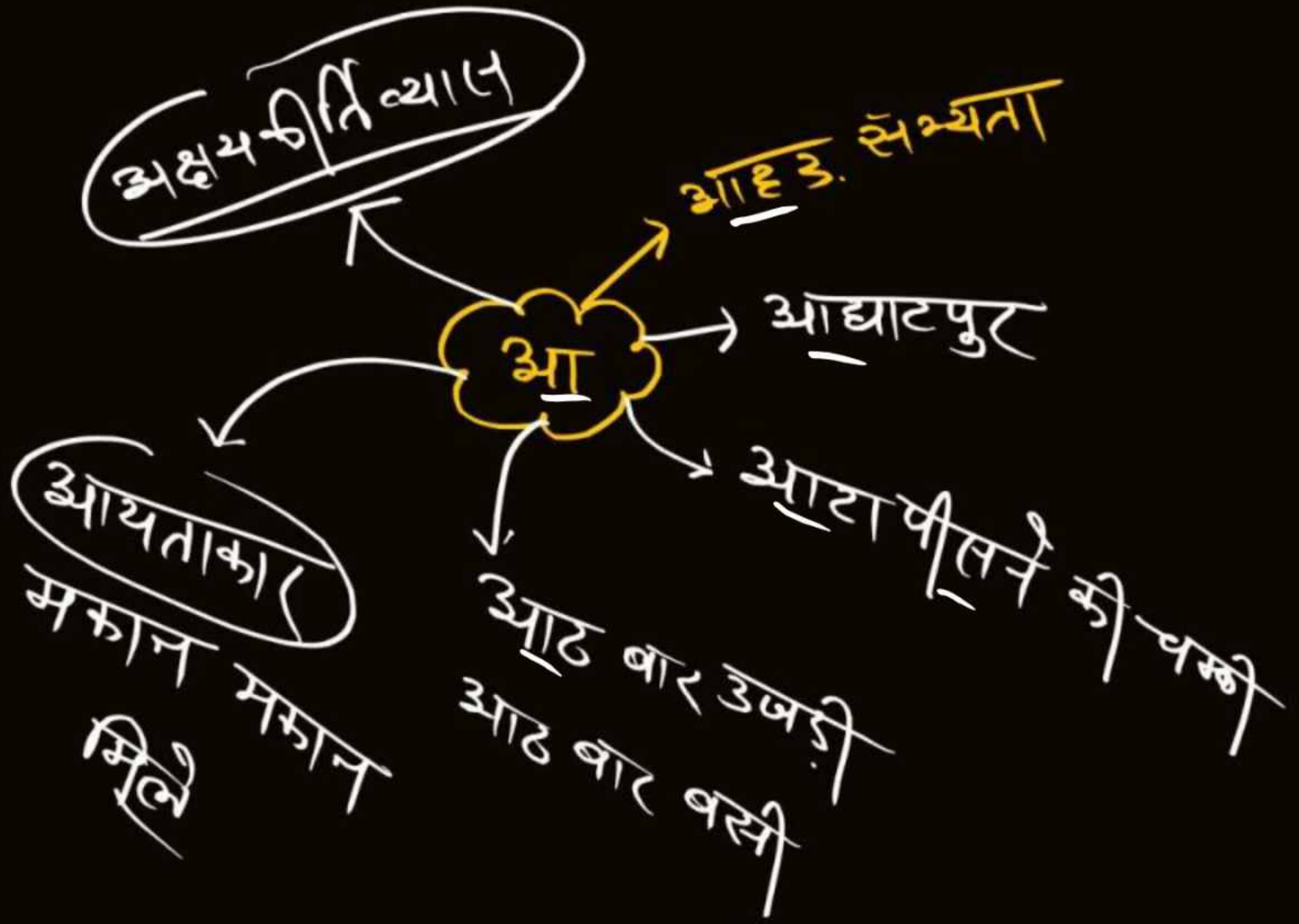

आ

- अक्षयकीर्ति व्यास
- आहड़ सभ्यता
- आघाटपुर
- आटा पीसने की चक्की
- आठ बार उजड़ी आठ बार बसी
- आयताकार मकान मकान मिले

→ 5000 वर्ष पुरानी सभ्यता मानी जाती है

→ **धातुकर्मी** : ताम्बे के बर्तन

↳ ताम्बा गलाने की भट्टीया मिली है

→ आहड़ सभ्यता के लोग चान्दी से परिचित नही थे

→ यहा के लोग धातुकर्मी और मृदभाण्डकर्मी थे

→ यहा 6 ताम्बे की मुद्राए तथा तीन मुहरे मिली है।

↳ इन पर एक तरफ त्रिशुल का आकंन तथा दुसरी तरफ अपॉलो यूनानी देवता का चित्रांकन है।

→ मृद्भाण्ड कर्मी :- मिट्टी से निर्मित बर्तन

↳ मिट्टी से बने बड़े बर्तन पर लाल और काले रंग का लेपहोता

↳ इन्हे बोलचाल की भाषा मे गौरे। कौठ कहा जाता है

→ मिट्टी से निर्मित 6 चुल्हे मिले है। (सामुहिक परिवार)

→ चुल्हे पर हाथ से अलकृत किया है।

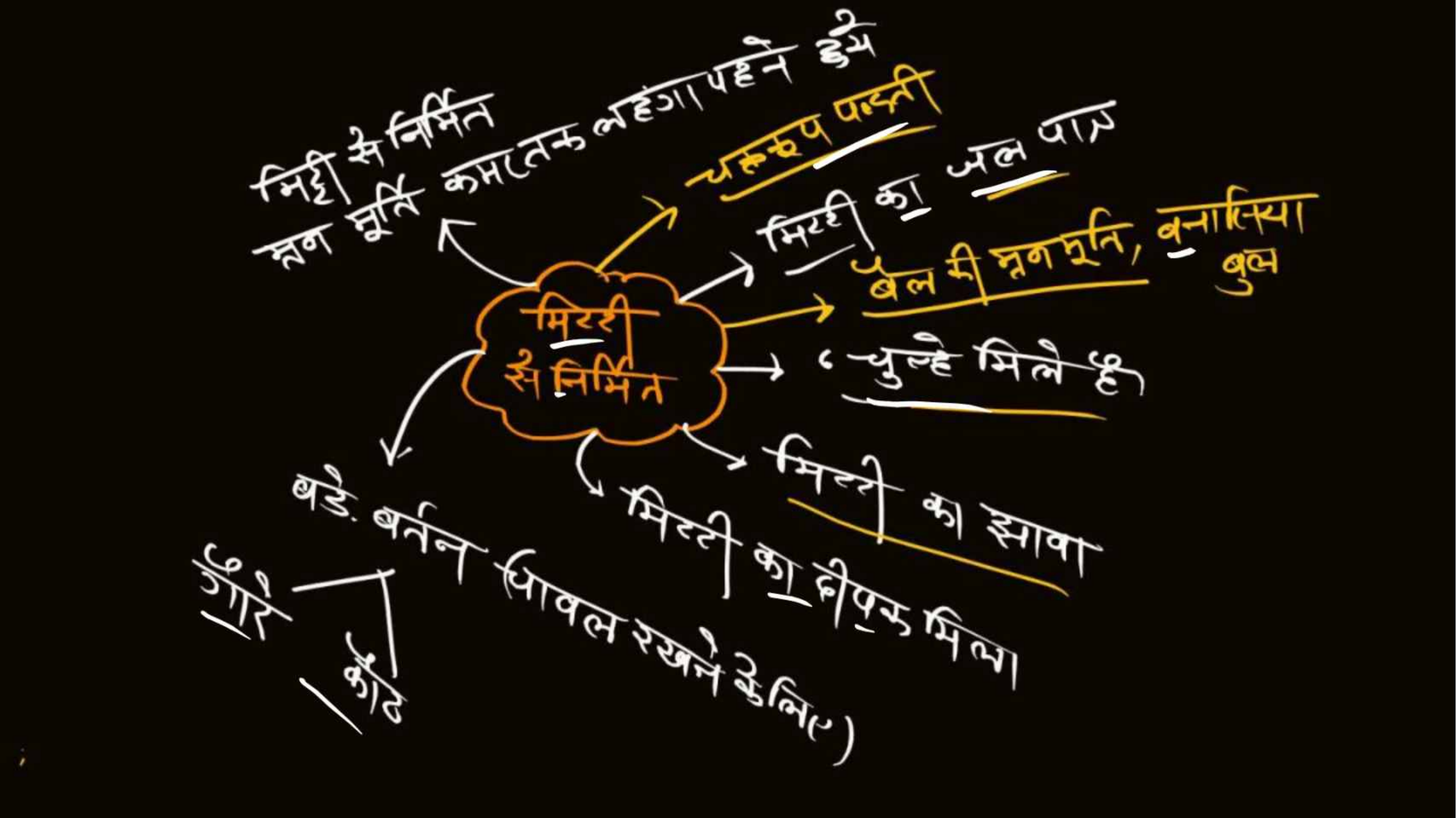

मिट्टी से निर्मित
मिट्टी से निर्मित स्नान मूर्ति कमरतक लहंगा पहने हुए
चक्कप पक्की
मिट्टी का जल पात्र
बैल की स्नान मूर्ति, बनालिया बुल
'चूल्हे मिले है'
मिट्टी का झावा
मिट्टी का दीपक मिला
बड़े बर्तन (चावल रखने के लिए)
गारें
ईंट

→ चावल के साक्ष्य मिले है ✓

→ शंख के साथ आभूषण बनाते थे

→ यहा पर 79 लोहे की मुद्रायें मिली है।

→ धीरे - धीरे लौह संस्कृति में प्रवेश

→ यहा पर 45 फीट लम्बे भवन मिले है।

→ यहा पर रंगाई छपाई का कार्य

→ मानव हथेली की छाप मिली

→ गणेश्वर सभ्यता : सीकर [redacted]

↳ नदी → कांतली नदी ✓

↳ 2800 ई.पू. मानी जाती है ✓

↳ खोज → रत्न चन्द्र अग्रवाल → 1972–77

→ उत्खनन → विजय कुमार 1978 में किया ✓

→ इस सभ्यता को ताम्रयुगीन सभ्यता की जननी तथा पुरातत्व का पुष्कर कहा जाता है

→ नोट → पुरातत्व का जनक → कनिंघम को कहा जाता है

यहां पर ताम्बे गलाने की भट्टियां मिली है, ताम्बे की कुल्हाड़ी

→ यहां पर मछली पकड़ने का कांटा मिलता है।

→ यहां पर फारसे व बाणाग्र मिले है।

→ यहां पर ताम्बे की पिन्ने भी मिली है

most यहां पर पत्थर के मकान और पत्थर के बांध मिले है।

→ यहां नीले मृदपात्र मिले है जिन्हे कपिषवर्णी कहा जाता है।

सिन्धु सभ्यता
खोज → B.B लाल | B.R. सिंदे द्वारा
बनावल नदी के किनारे
राजसमन्द
मिट्टी से निर्मित खिलौने
कांच की गोलीया
पत्थर की गोलीया
यहा से टिल्ले मिले है
हाथीदान्त की चुड़ीया

वैराठ सभ्यता

बैराठ सभ्यता : कोटपुतली बहरोड़ (पहले जयपुर)

↳ यह स्थल वर्तमान में शाहपुरा उपखण्ड में स्थित है।

→ यह स्थल बाणगंगा/अर्जुनी गंगा नदी के किनारे

→ मत्स्य जनपद की राजधानी विराटनगर थी

→ यहां विराट नामक राजा राज किया करता था

→ खोज → 1936-37 दयाराम साहनी ने की

→ उत्खनन : नीलरत्न बनर्जी और कैलाश दिक्षित ने किया

↳ 1962-63

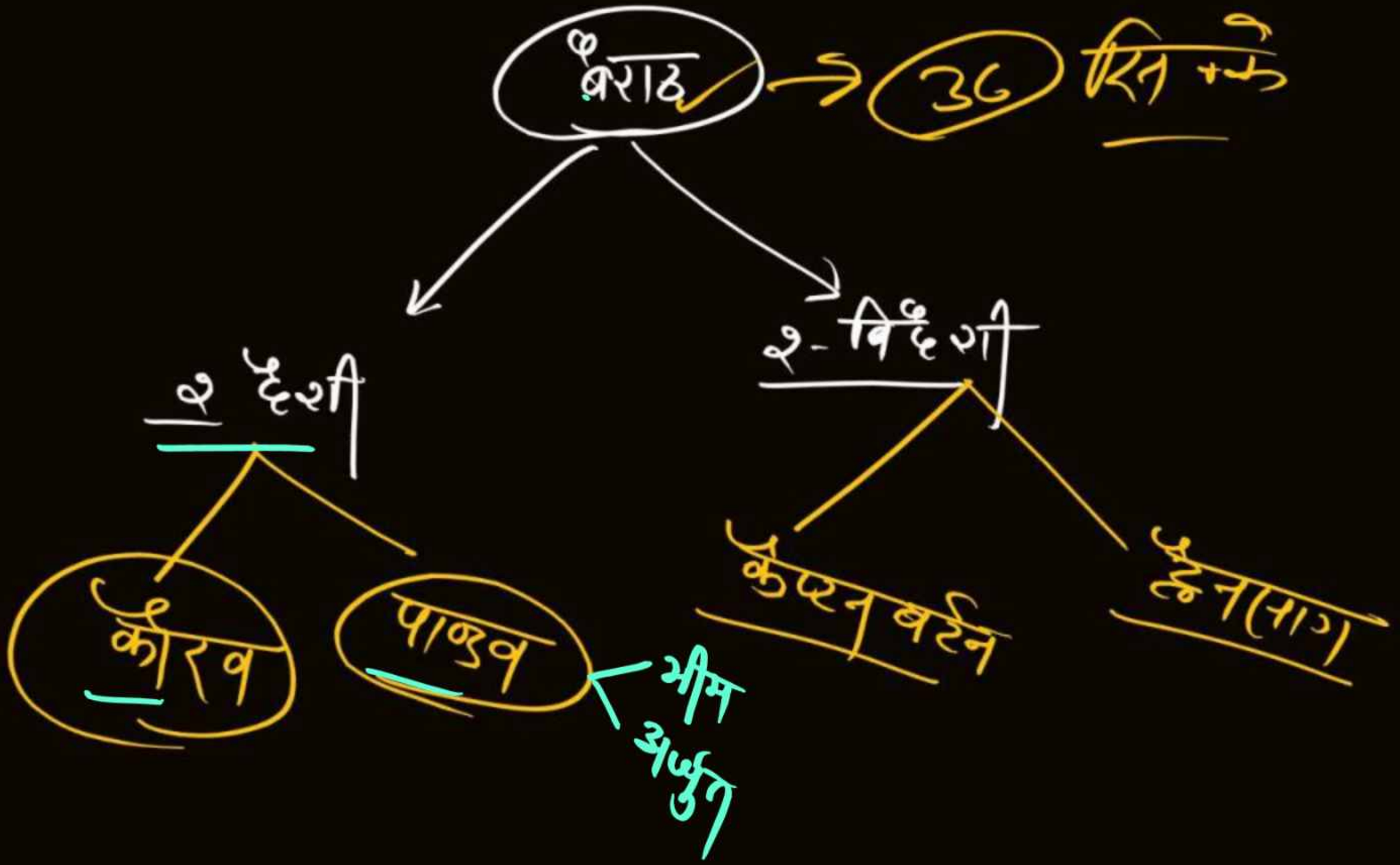

36
१ देशी
२ विदेशी
कौरव
पाण्डव
भीम
अर्जुन

→ पाण्डवो का अज्ञातवास यहीं बीता

→ कौरवो के पद चिन्ह मिले है।

→ भीम ने किचंक नामक राक्षस वध किया

→ भीम ने द्रौपती के लिए भीमताल बनवाया

→ यही पर पाण्डव विराट नामक राजा के पास रहे

1837 में कैप्टन बर्ट ने भाब्रु शिलालेख की खोज की

most

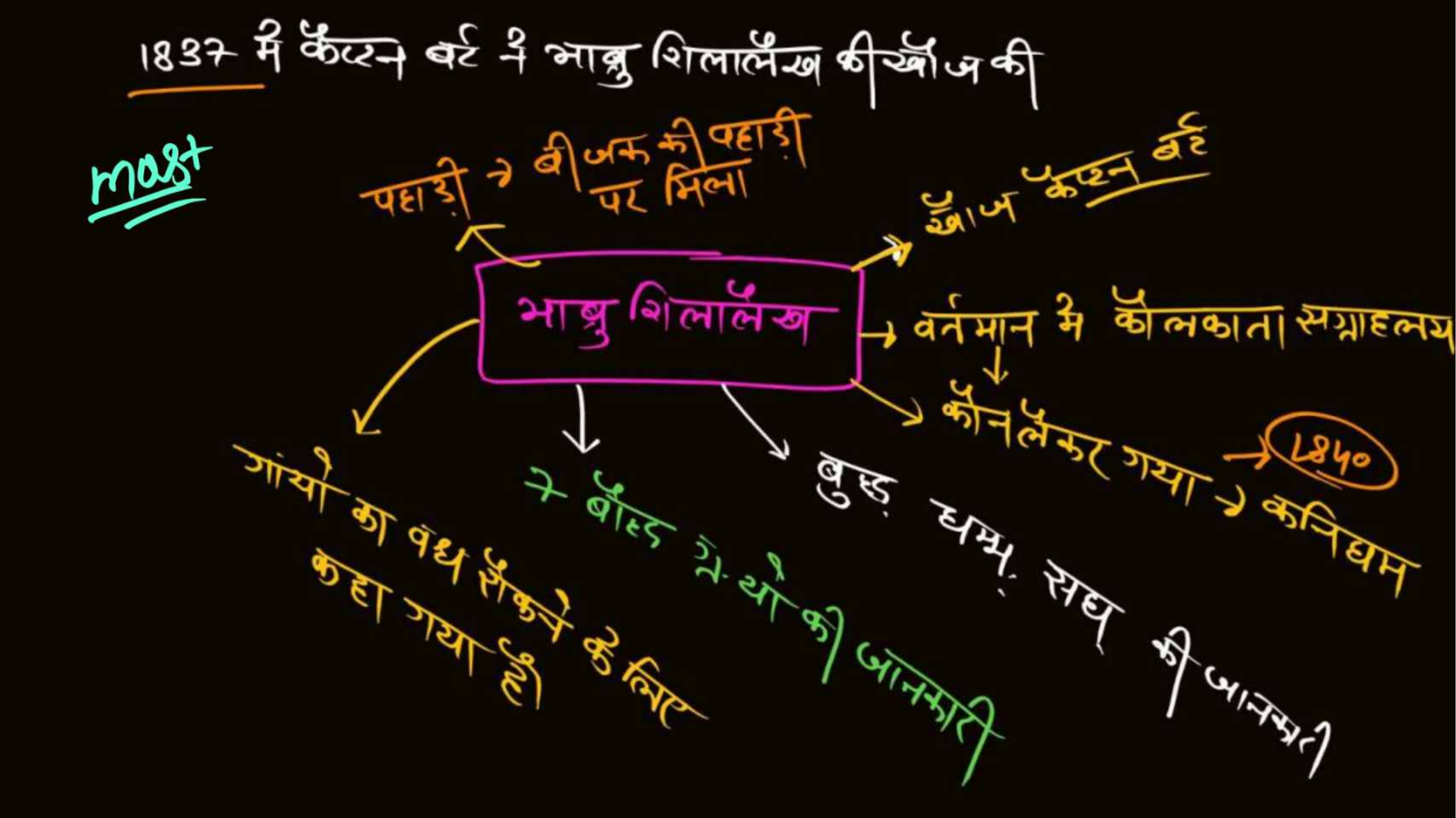

बिजक की पहाड़ी पर बौद्ध स्तूप, गोल मन्दिर के अवशेष मिले हैं।

→ गोल मन्दिर के अवशेष → बैराठ में

→ भीम डुंगरी गणेश डुंगरी मोती डुंगरी में शंख लिपि अंकित है

जिसे अभी तक पढ़ा नहीं गया

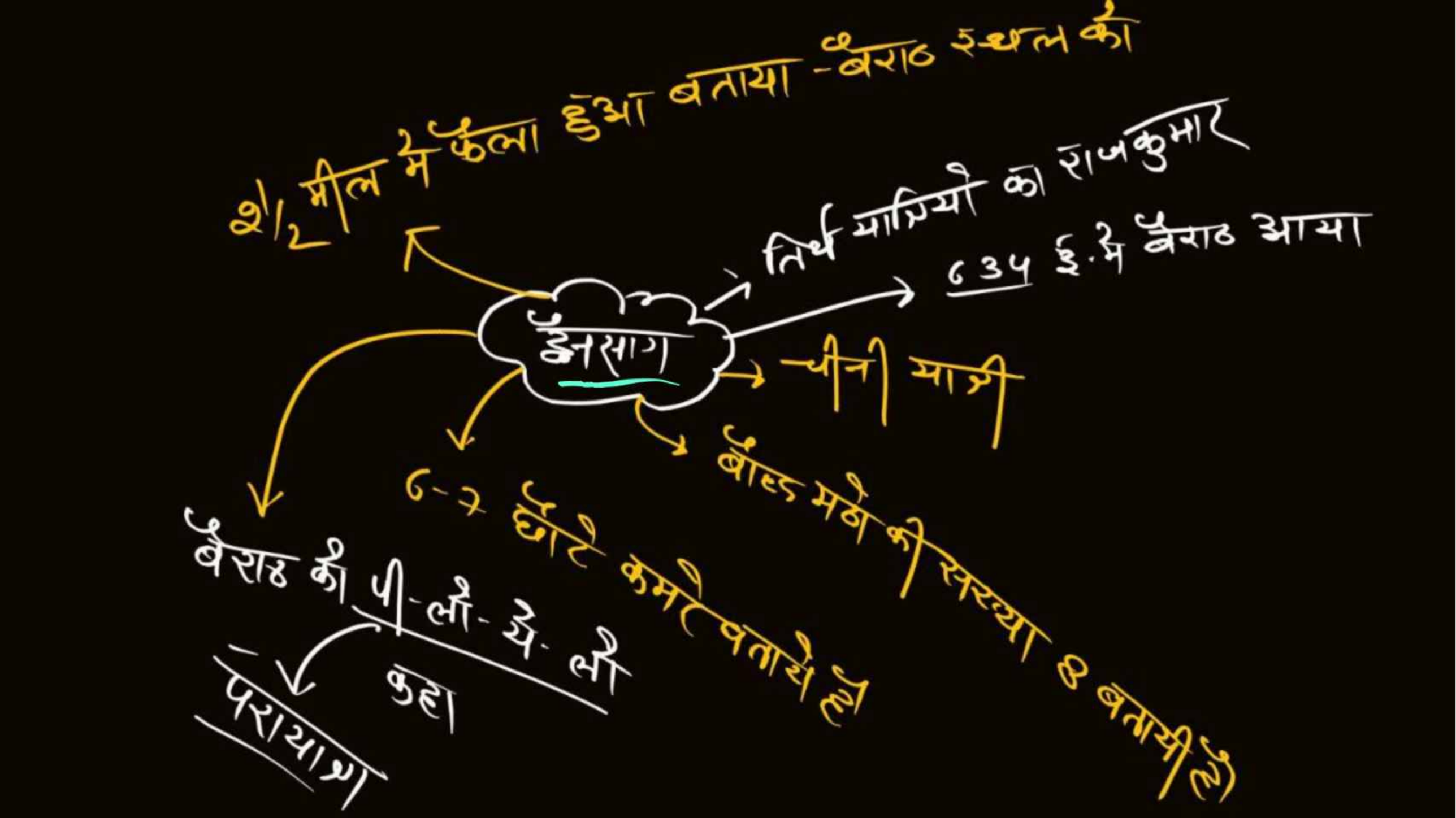

ह्वेनसांग

- 8½ मील मे फैला हुआ बताया - बैराठ स्थल को
- तिर्थ यात्रियो का राजकुमार
- 634 ई. मे बैराठ आया
- चीनी यात्री
- बौद्ध मठो की संख्या 8 बताई है
- 6-7 छोटे कस्बे बताये है
- बैराठ को पी-ओ-ये-ओ कहा
  - पारयात्र

बैराठ मे 36 मुद्राये एक कलश मे कपडे मे लपेटी हुयी

→ सूती का कपड़ा हाथ से बुना हुआ

→ इन्डोग्रीक युनानी राजा मिनेन्डर के सिक्के मिले है

→ अकबर ने बैराठ मे टकसाल ढालने का कारखाना खोला

→ अकबर के बाद जहांगीर शाहजहां, औरंगजेब के समय टकसाल थी

→ राम सिह II के खुदाई के समय एक मंजुषा मिली जिसमे बुद्ध की अस्थिया मिली

→ बैराठ सभ्यता मे भालू, हाथी, हिरन बतख के शैलाश्रय चित्र मिले

→ यहा स्वास्तिक का चिन्ह मिला है 卐

→ Imp बैराठ को प्राचीन युग की चित्र शाला भी कहा जाता है

→ बालाथल सभ्यता → वल्लभ नगर उदयपुर

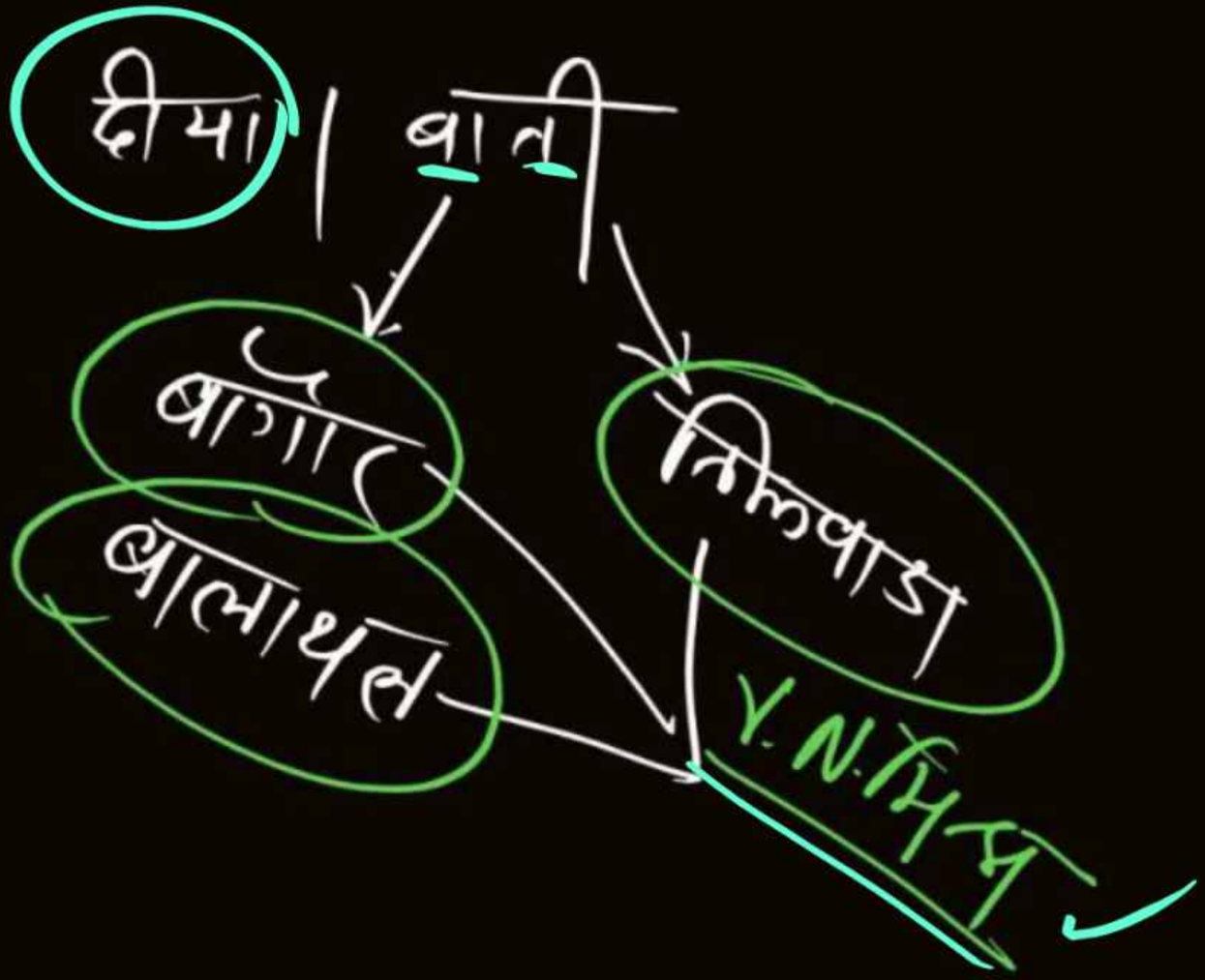

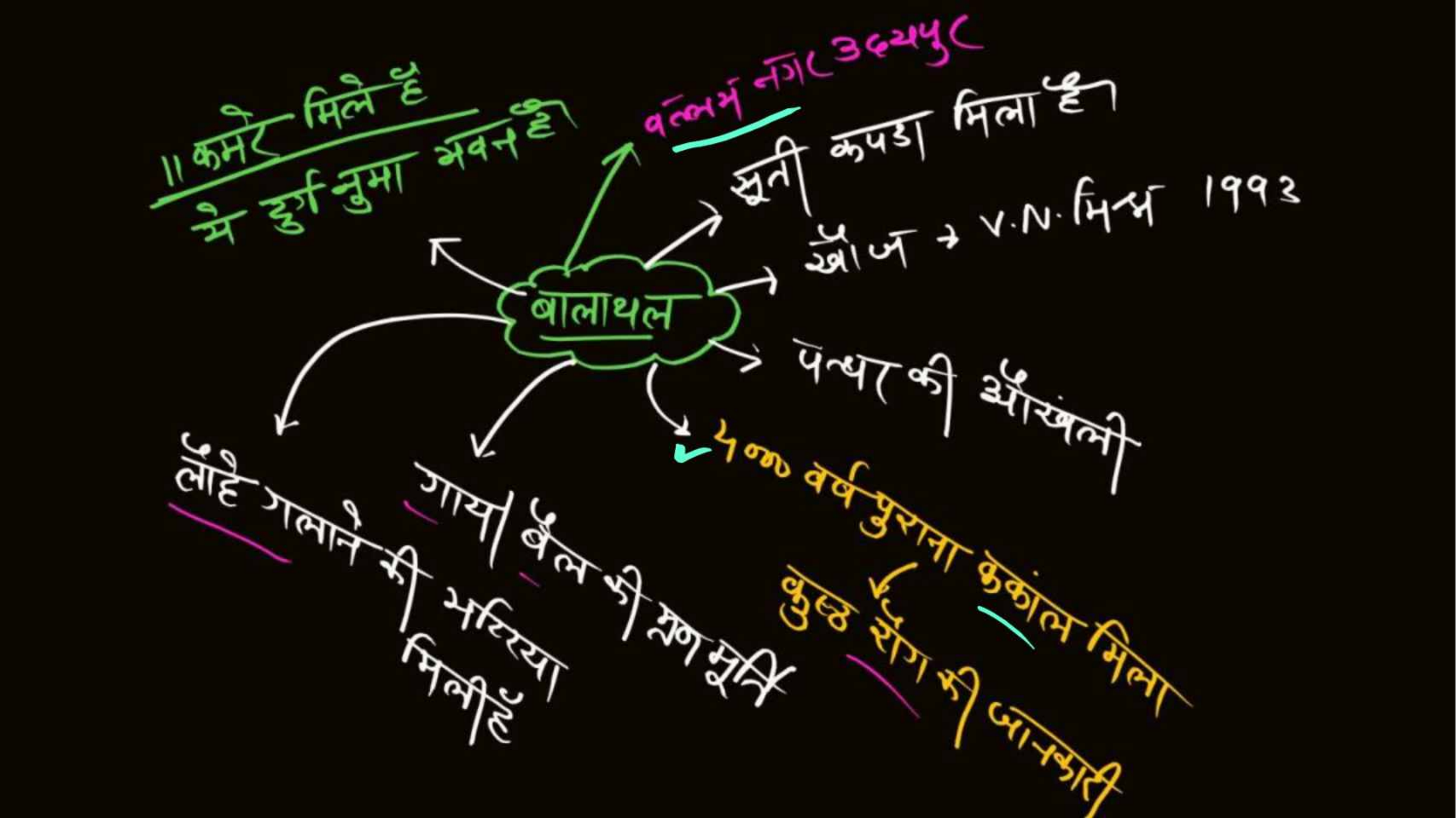

बालाथल

वल्लभ नगर उदयपुर

सूती कपड़ा मिला है।

खोज → V.N. मिश्र 1993

पत्थर की ओखली

5000 वर्ष पुराना कंकाल मिला

कुष्ठ रोग की जानकारी

गाय/बैल की मृण मूर्ति

लौह गलाने की भट्टियां मिली हैं

11 कमरे मिले हैं

से दुर्गनुमा भवन है।

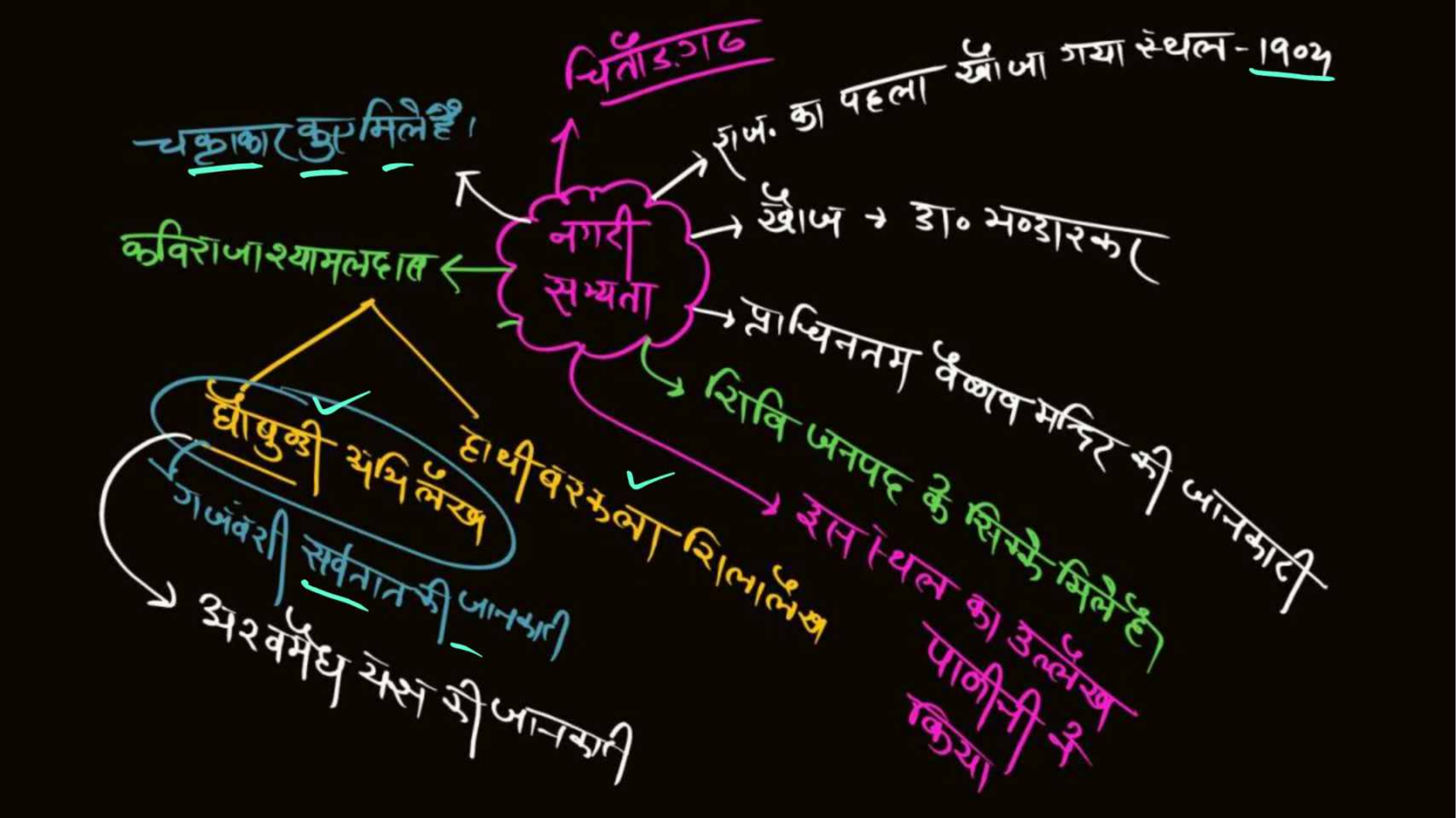

नगरी सभ्यता

- चित्तौड़गढ़
- राज. का पहला खोजा गया स्थल - 1904
- खोज → डा. भण्डारकर
- प्राचीनतम वैष्णव मन्दिर की जानकारी
- शिवि जनपद के सिक्के मिले हैं।
- इस स्थल का उल्लेख पाणिनी ने किया
- चक्राकार कुएं मिले हैं।
- कविराजा श्यामलदास
  - घोसुण्डी अभिलेख
    - गजवंशी सर्वतात की जानकारी
    - अश्वमेध यज्ञ की जानकारी
  - हाथीबाड़ा शिलालेख

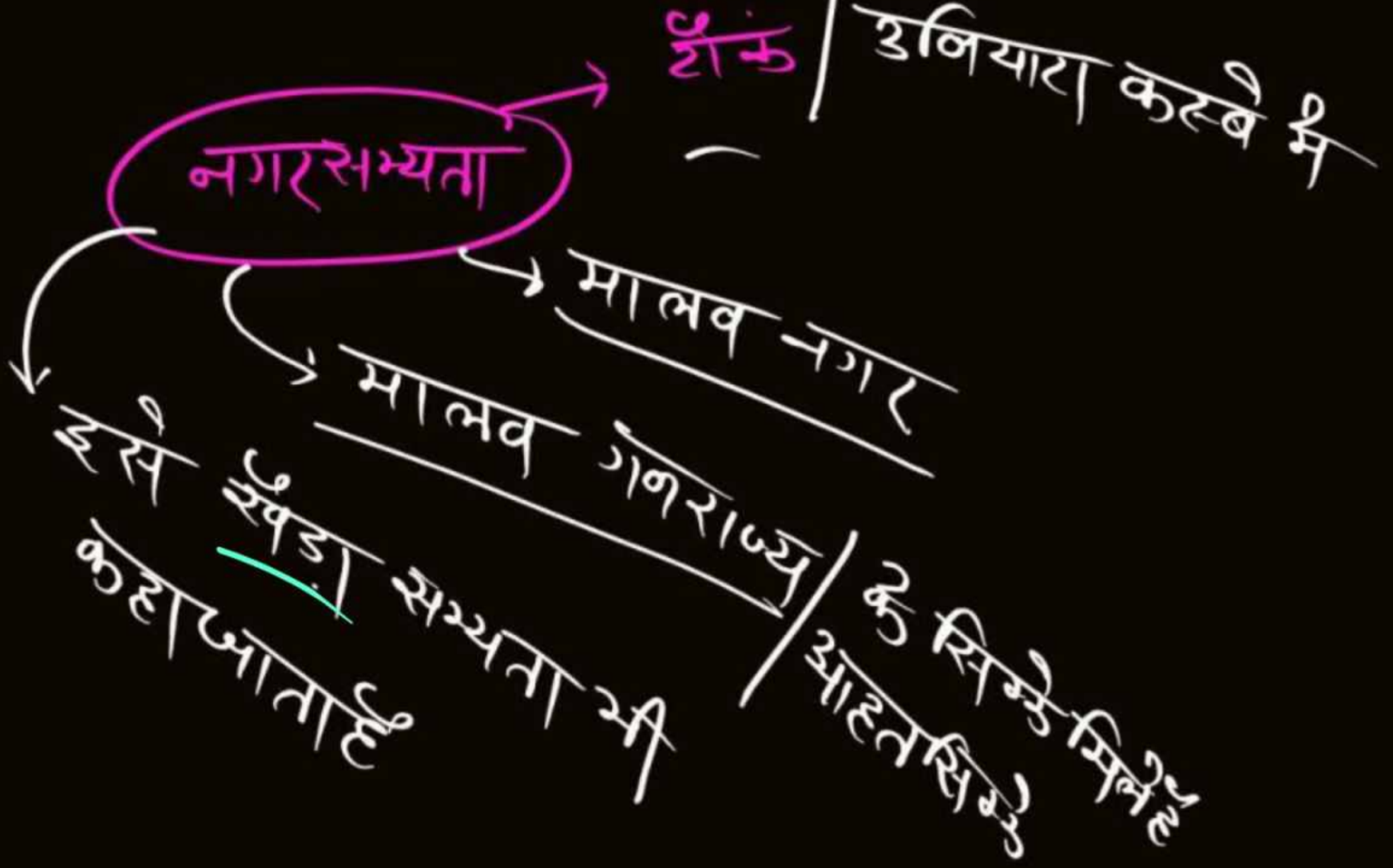

नगरसभ्यता

→ टौंक | उनियारा कस्बे में

→ मालव नगर

→ मालव गणराज्य | के सिक्के मिले हैं
आहत सिक्के

इसे खेड़ा सभ्यता भी
कहा जाता है

सुनारी सभ्यता

- लौहे का सबसे बड़ा प्याला
- चावल के साक्ष्य
- कातली नदी के किनारे
- झुंझुनू [redacted]
- राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा खोजा गया स्थल
- मौर्यकालीन अवशेष मिले हैं
- लौहयुगीन सभ्यता
  - लौहे के तीर / प्याला
- लौहे गलाने की भट्टीया मिली है

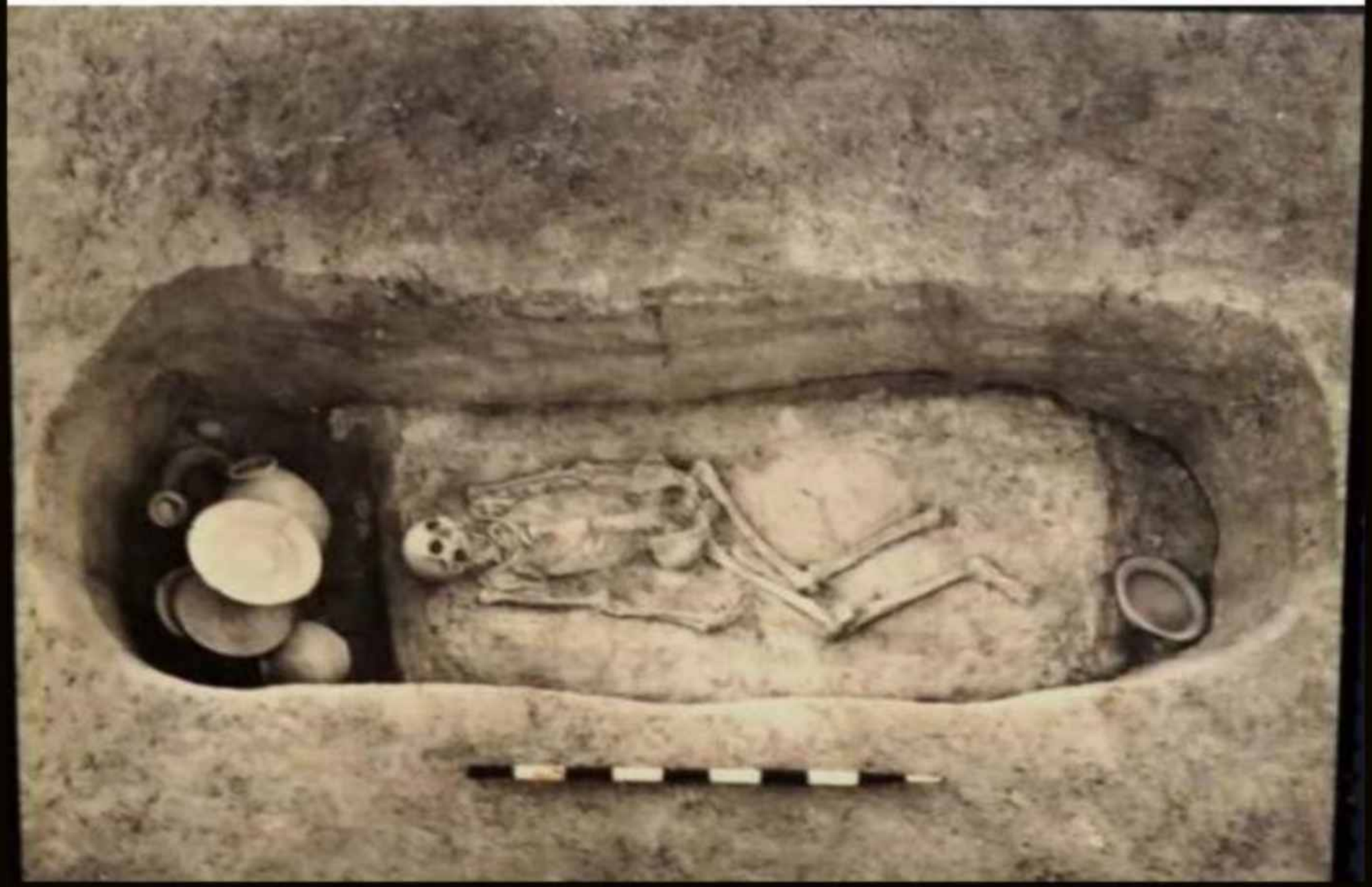

कालीबंगा सभ्यता : हनुमानगढ जिले में पीलीबंगा के पास

↓

शाब्दिक अर्थ → काले रंग की चुड़ीया

→ किसने बताया : इटली के टैस्सीतोरी ने सर्वप्रथम जानकारी दी

→ काल → 2350 ई.पू. 1750 ई.पू. तक

→ नदी : घग्घर, नट, नाली प्राचीन सरस्वती, बहुधान्यदायक नदी के किनारे

→ खोज : 1952-53 अमलानन्द घोष ने की थी

नोट : स्वतंत्रता के बाद खोजा गया पहला स्थल

→ उत्खनन : 1961-69 के मध्य ब्रजवासी लाल, बालकृष्ण थापर ने किया

उपनाम :- ✓

↓

विश्व में प्रथमसाक्ष्य ✓

↓

सड़क, भवन, घर

↓

खेती →

↓

खाद्यान

↓

"क"

उपनाम :-

- ✓ कांस्ययुगीन सभ्यता ✓
- ✓ दीन-हीन सभ्यता ✓
- ✓ प्राक् हड़प्पा कालीन स्थल ✓
- ✓ हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के समकालीन
- ✓ सिन्धु घाटी सभ्यता की तीसरी राजधानी (दशरथ शर्मा)
- हड़प्पा कालिन संस्कृति के समकालीन

5 स्तर → (2), (3)

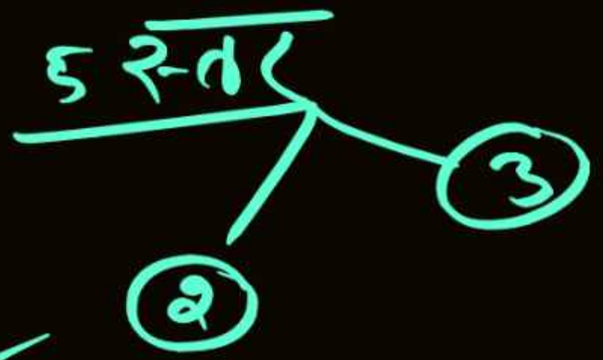

प्राक हड़प्पा → 5 स्तर ← हड़प्पा कालीन

प्राक हड़प्पा → 1- 2 स्तर

खेती

- दक्षिण, पूर्वी भाग मे खेती के साक्ष्य
- लकड़ी के हल के निशान
- दुहरे जुते हुये खेतो के साक्ष्य

हड़प्पा कालीन → 3, 4, 5 स्तर

- पश्चिम → दुर्गीकरण, प्रशासनिक व्यवस्था
- पूर्वी → नगरीकरण

विश्व मे प्रथम साक्ष्य :

- लकड़ी की नालीया | इन्टों की नालीया
- भुकम्प के साक्ष्य मिले है।
- शल्य चिकित्सा का ज्ञान
- खोपड़ी मे छः छेद

→ सड़क : → समकोण दिशा, आयताकार पद्धति जाल पद्धति मे बनी है।

"सतरंज प्रणाली"

सड़कों की चौड़ाई 7.2 मीटर

गलियों की चौड़ाई → 1.8 मीटर

→ यहां के मकान कच्ची ईंटों और पक्की ईंटों के मिले है

→ यहां फ़र्श पर अलंकृत ईंटे मिले है।

→ यहां के मकान सड़कों की तरफ न खुलकर गलीयों की तरफ खुलते थे

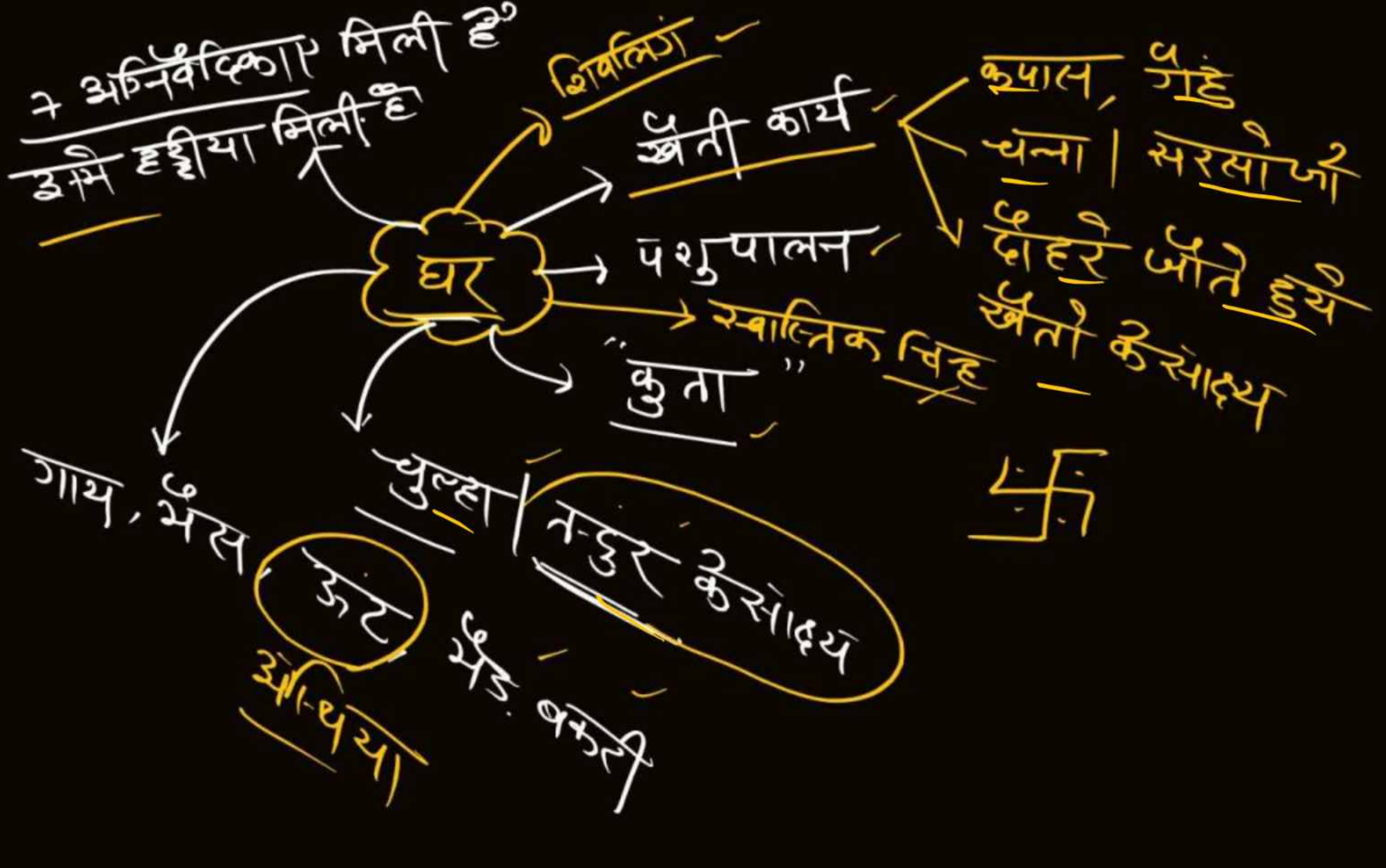

7 अग्निवेदिकाए मिली है

इसी हड्डीया मिली है

- घर
  - शिवलिंग
  - खेती कार्य
    - कपास, गेहूं
    - चना | सरसो जौ
    - दोहरे जोते हुये खेतो के साक्ष्य
  - पशुपालन
  - स्वास्तिक चिह्न
  - "कुत्ता"
  - गाय, भैंस, ऊंट, भेड़, बकरी
    - अस्थियां
  - चूल्हा | तन्दूर के साक्ष्य

यहां पर तीन प्रकार के स्वाधान मिले हैं

→ आंशिक समाधी
→ पूर्ण समाधी
→ दाह संस्कार

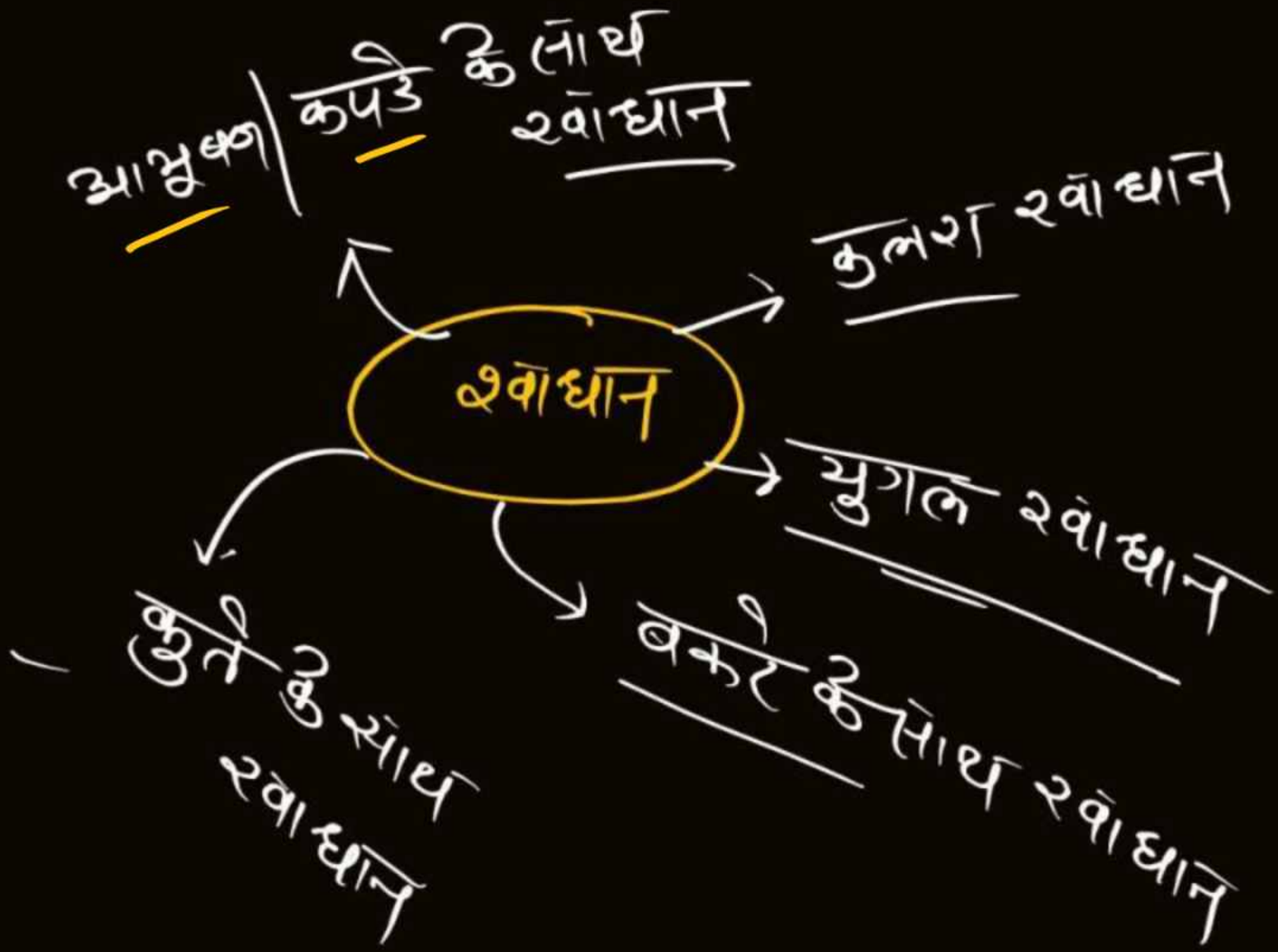
आभूषण/कपड़े के साथ श्रृंगार
कलश श्रृंगार
श्रृंगार
युगल श्रृंगार
जूते के साथ श्रृंगार
बकरे के साथ श्रृंगार

→ महापट अग्निवेदिका, बेलनाकार मुहरे, मिट्टी का पैमाना, बैल गाय की मृण मूर्ति माप तौल के बाट, ऊंट की अस्थियां मिली

→ बलि प्रथा के साक्ष्य मिले है।

→ 1985 में कालीबंगा संग्रहालय बनाया गया

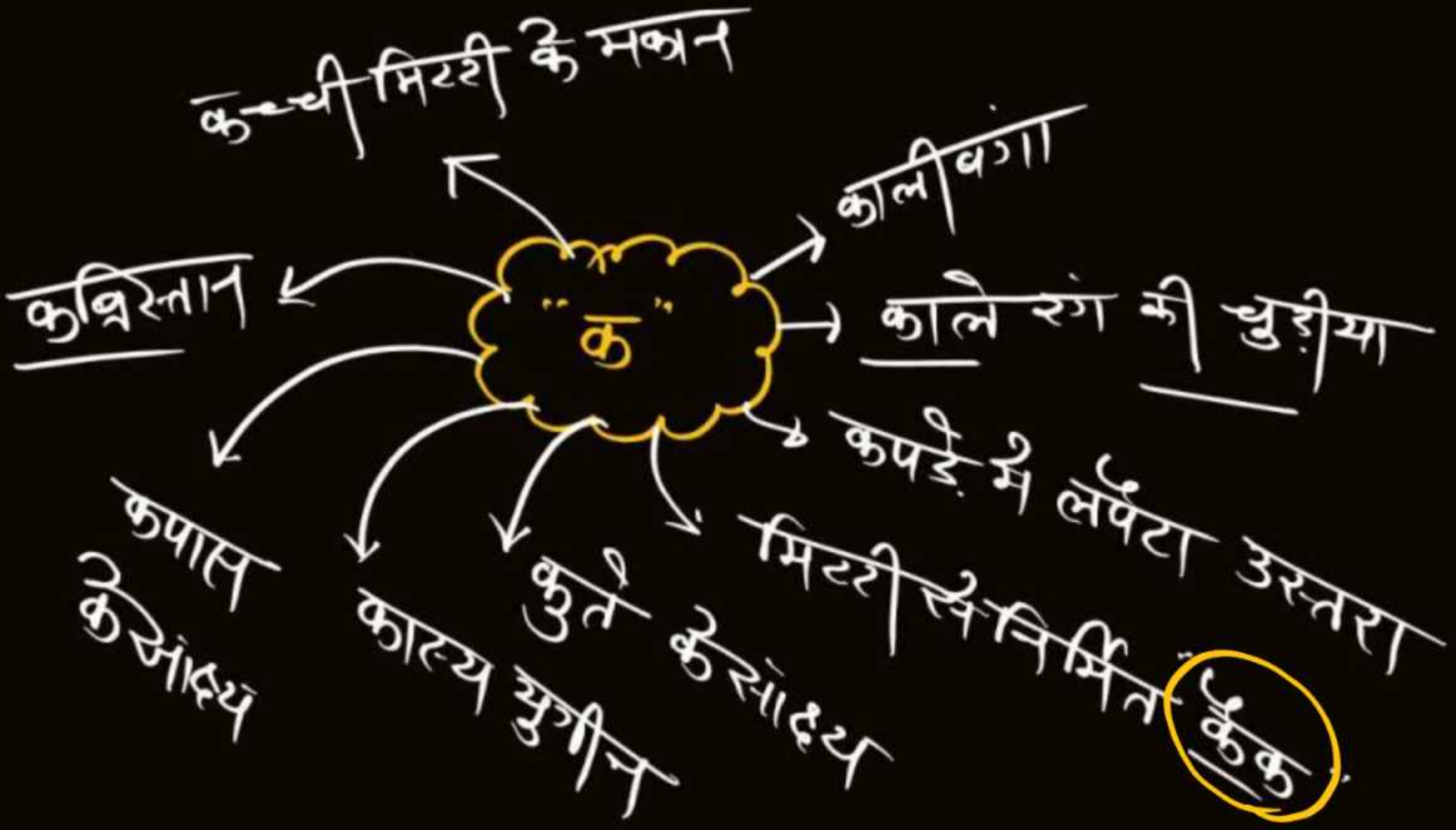

"क"
कच्ची मिट्टी के मकान
कालीबंगा
कब्रिस्तान
काले रंग की चुड़ीया
कपड़े में लपेटा उस्तरा
मिट्टी से निर्मित केक
कपास के साक्ष्य
कास्य युगीन
कुत्ते के साक्ष्य

मनके
अंगूठी
POCO
SHOT ON POCO F1

POCO
SHOT ON POCO F1

→ मिट्टी से निर्मित बैलगाड़ी

POCO
SHOT ON POCO F1

POCO
SHOT ON POCO F1

POCO
SHOT ON POCO F1

POCO

पुरापाषाण काल	→ डीडवाना, जायल, भानगढ़, इन्द्रगढ़	→ हैण्ड एक्स, कुल्हाड़ी
नवपाषाण काल	→ आहड़, कालीबंगा, गिलुण्ड	→ कुल्हाड़ी
ताम्रपाषाण काल	→ गणेश्वर, किराड़ोत, पुगल, कुराड़ा	→ विविध उपकरण स्थायी जीवन
मौर्य कालीन	→ बैराठ, सुनारी, नोह, जोधपुरा	,,
लौहयुगीन	→ नोह, विराटनगर, सुनारी, रैढ, भीनमाल, नगरी, चक चौरासी	,,

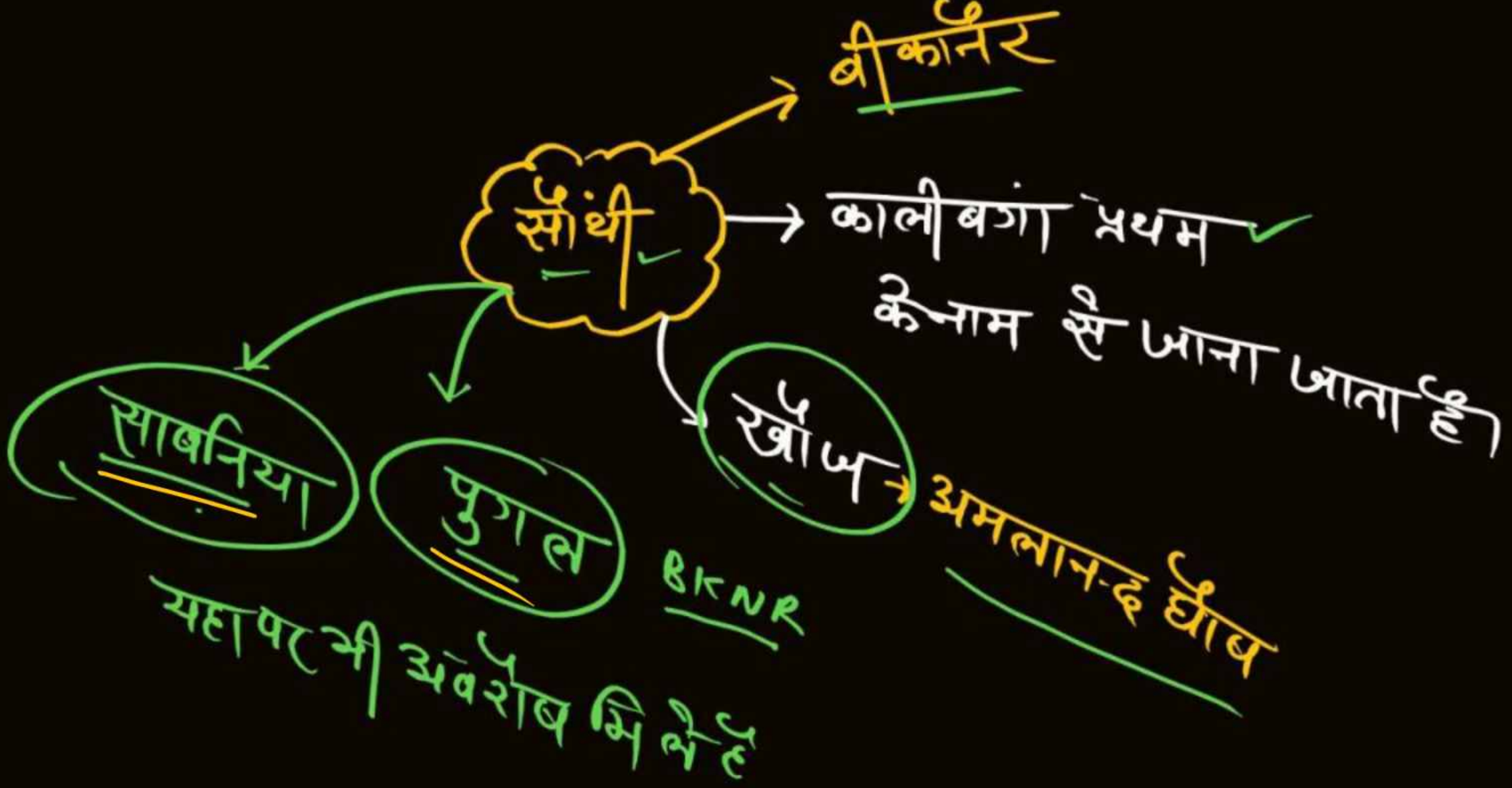

बीकानेर
सोंथी
कालीबंगा प्रथम के नाम से जाना जाता है
खोज
अमलानन्द घोष
साबनिया
पुगल
BKNR
यहा पर भी अवशेष मिले है

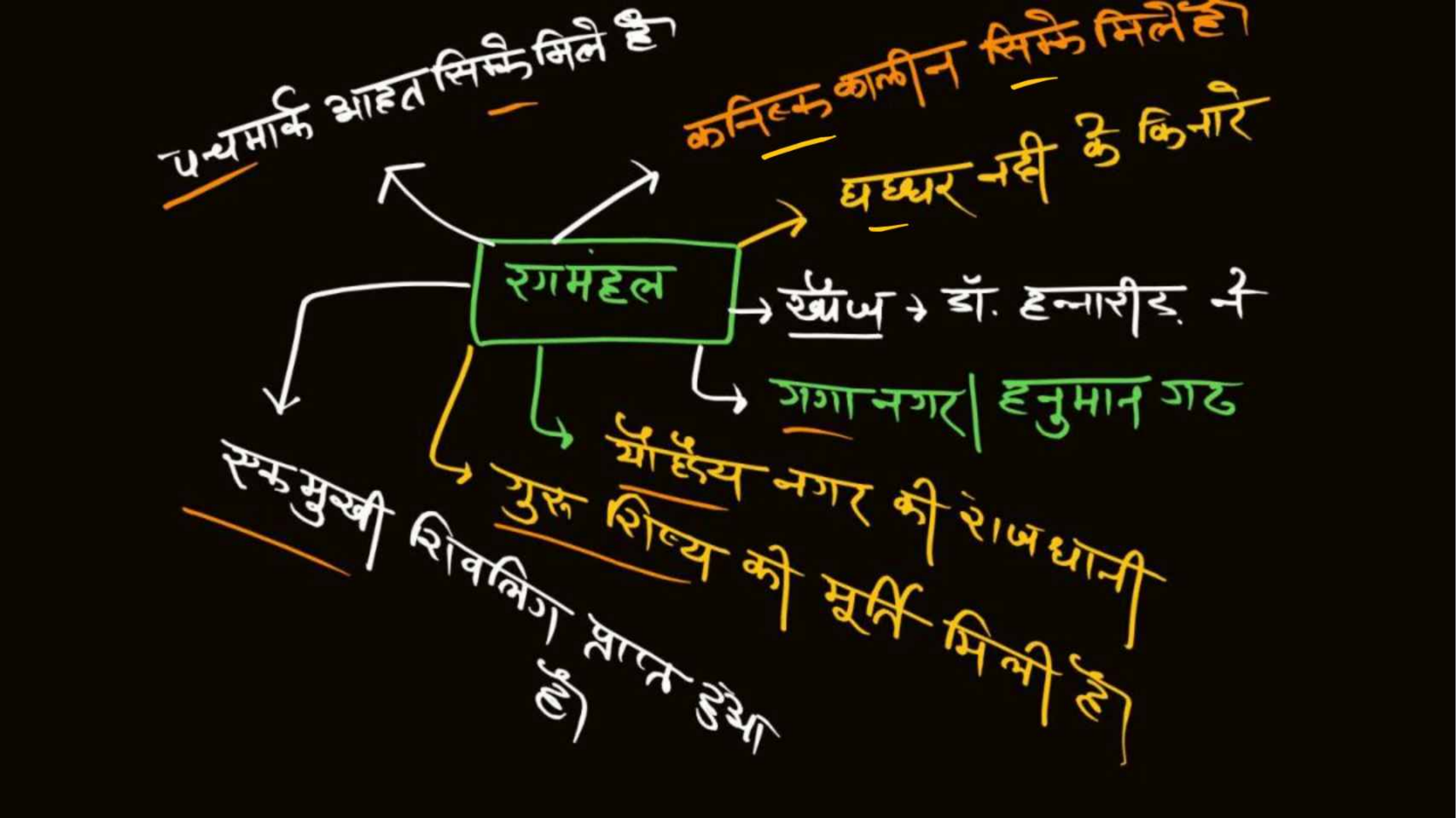

रंगमहल

- पञ्चमार्क आहत सिक्के मिले हैं
- कनिष्क कालीन सिक्के मिले हैं।
- घग्घर नदी के किनारे
- खोज → डॉ. हन्नारीड ने
- गंगानगर | हनुमानगढ़
- यौधेय नगर की राजधानी
- गुरु शिष्य की मूर्ति मिली है।
- एकमुखी शिवलिंग प्राप्त हुआ है।

कालीबंगा, पीलीबंगा, रंगमहल → घग्घर नदी

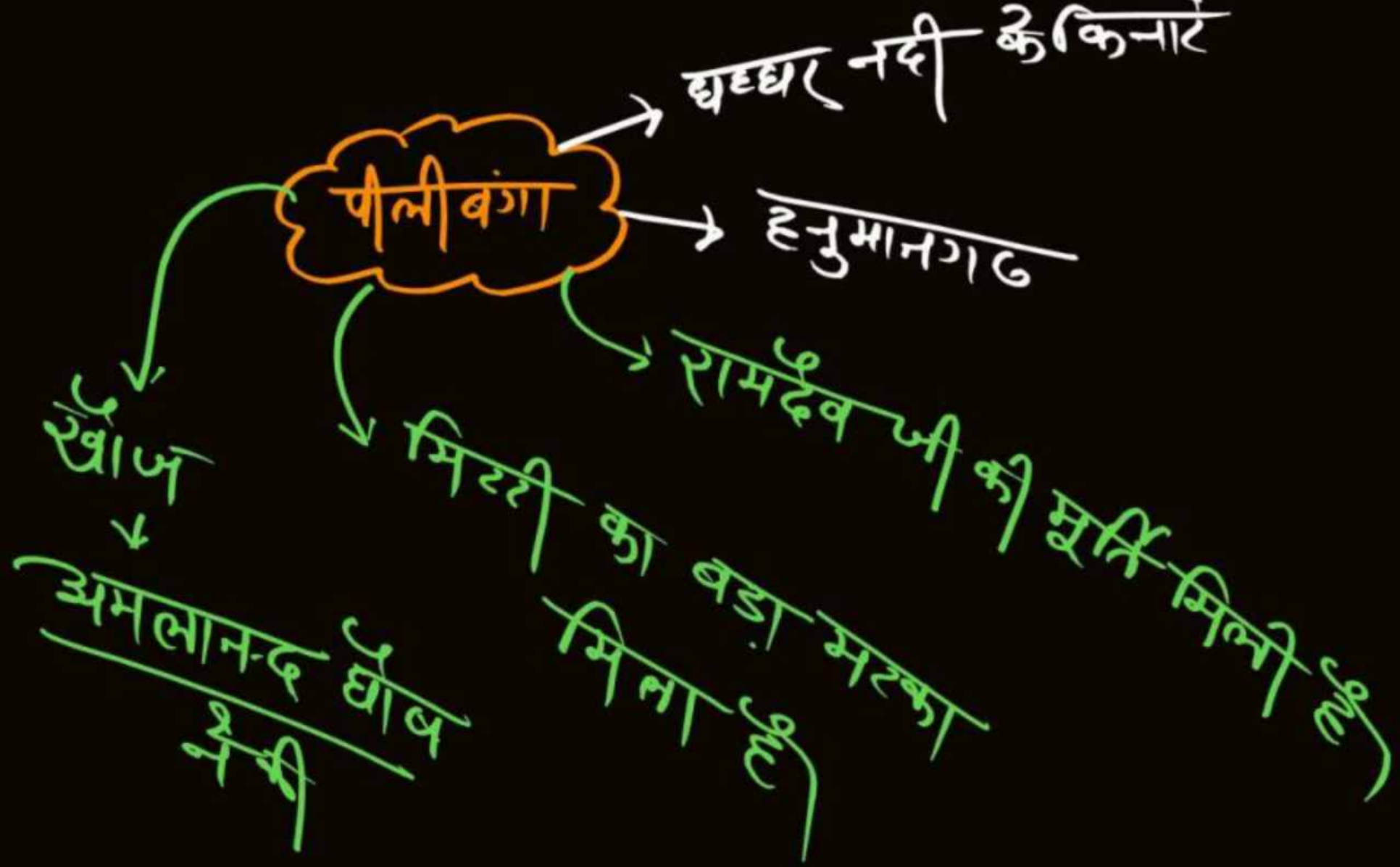

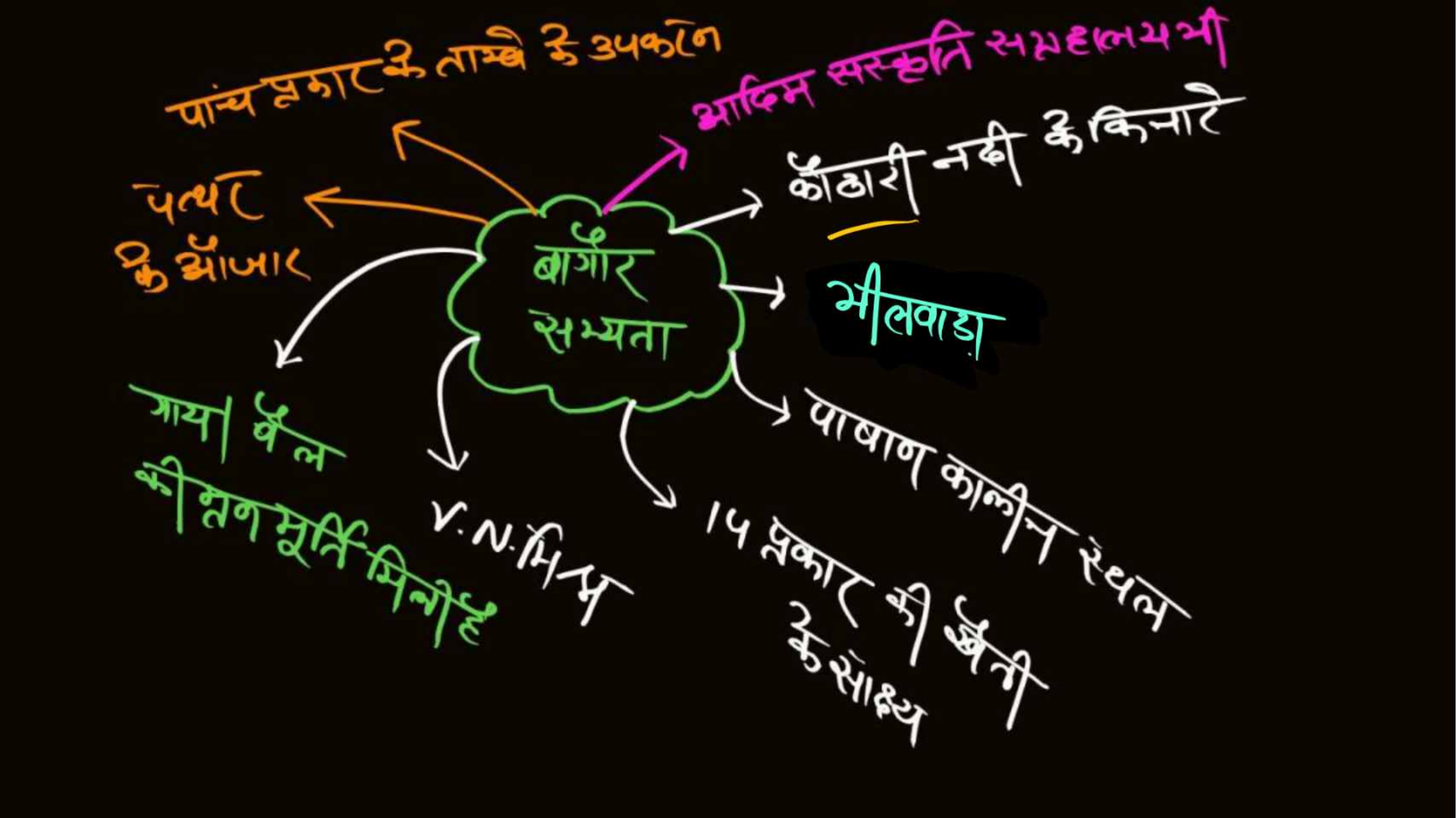

बागौर सभ्यता
पांच प्रकार के ताम्बे के उपकरण
आदिम संस्कृति संग्रहालय भी
कोठारी नदी के किनारे
भीलवाड़ा
पाषाण कालीन स्थल
15 प्रकार की खेती के साक्ष्य
V.N. मिश्र
गाय/बैल की मृण मूर्ति मिली है
पत्थर के औजार

Trick

दिया | बाती

आहड़ सभ्यता

बागौर

तिलवाड़ा

बालाथल

खोजकर्ता → V.N. मिश्र

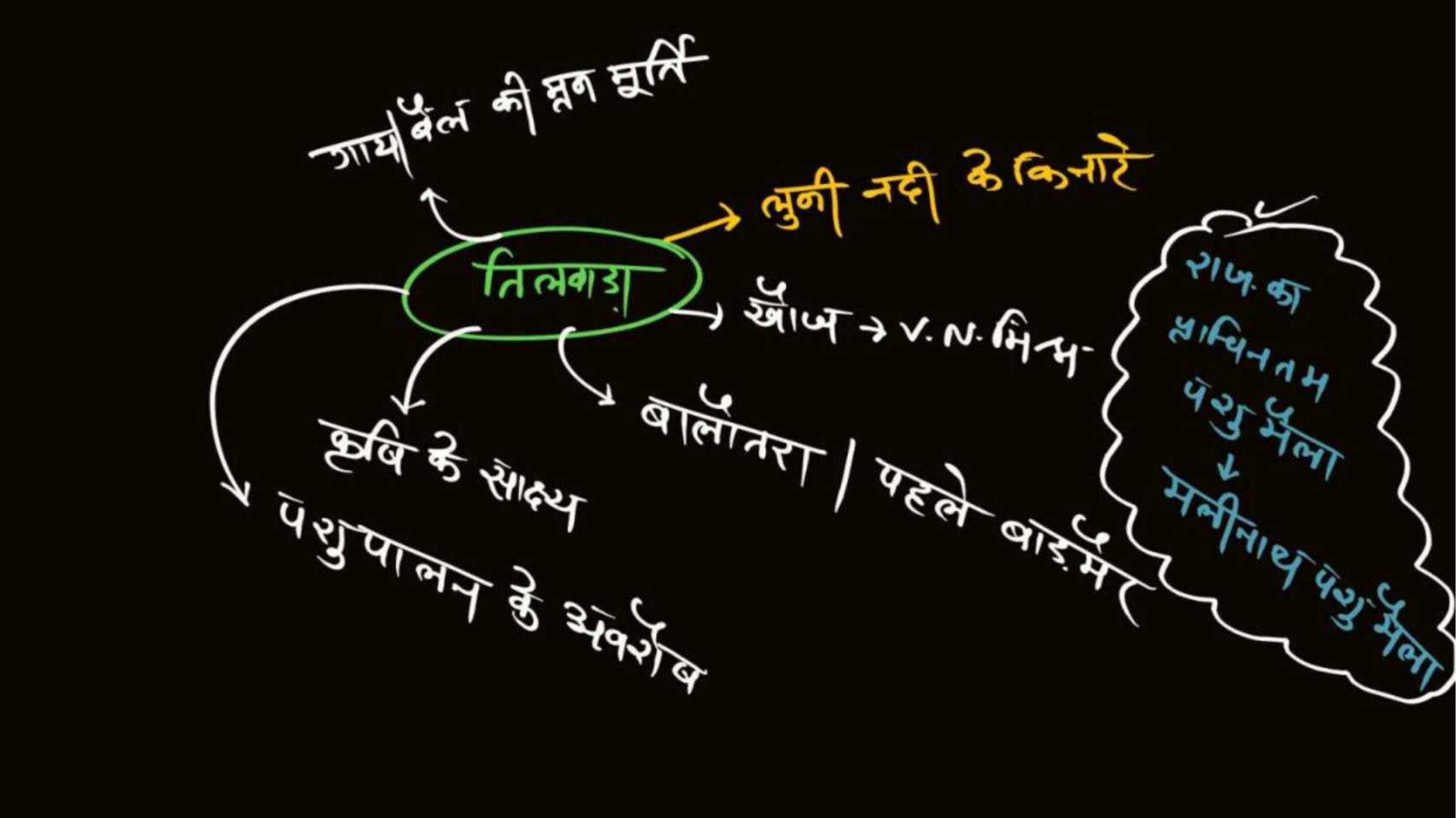

गाय/बैल की मृण मूर्ति
तिलवाड़ा
लुनी नदी के किनारे
खोज → V.N. मिश्र
बालोतरा / पहले बाड़मेर (
कृषि के साक्ष्य
पशुपालन के अवशेष
राज. का प्राचीनतम पशु मेला
↓
मल्लीनाथ पशु मेला

कुराड़ा → डीडवाना | कुचामन →(अब)
→ पहले नागौर
→ इसे औजारो की नगरी कहते है।

औझीयाना
सभ्यता
भीलवाड़ा

किराड़ोत स्थल : जयपुर
→ ताम्बे की 58 चुडीया
एक हाथ मे 28 चुडीया मिली है।

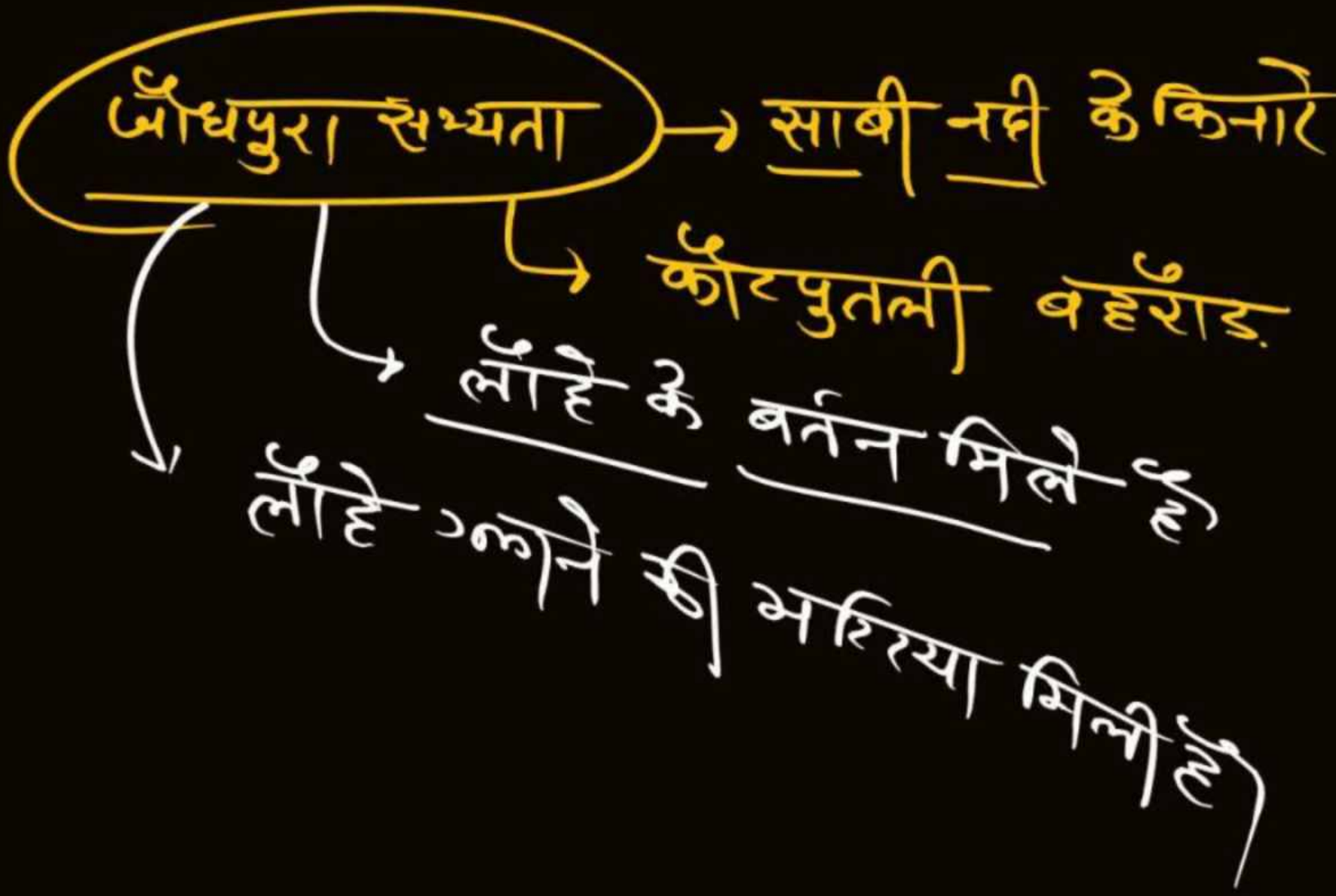

जौधपुरा सभ्यता → साबी नदी के किनारे

→ कोटपुतली बहरोड़

→ लौहे के बर्तन मिले है

→ लौहे गलाने की भट्टिया मिली है

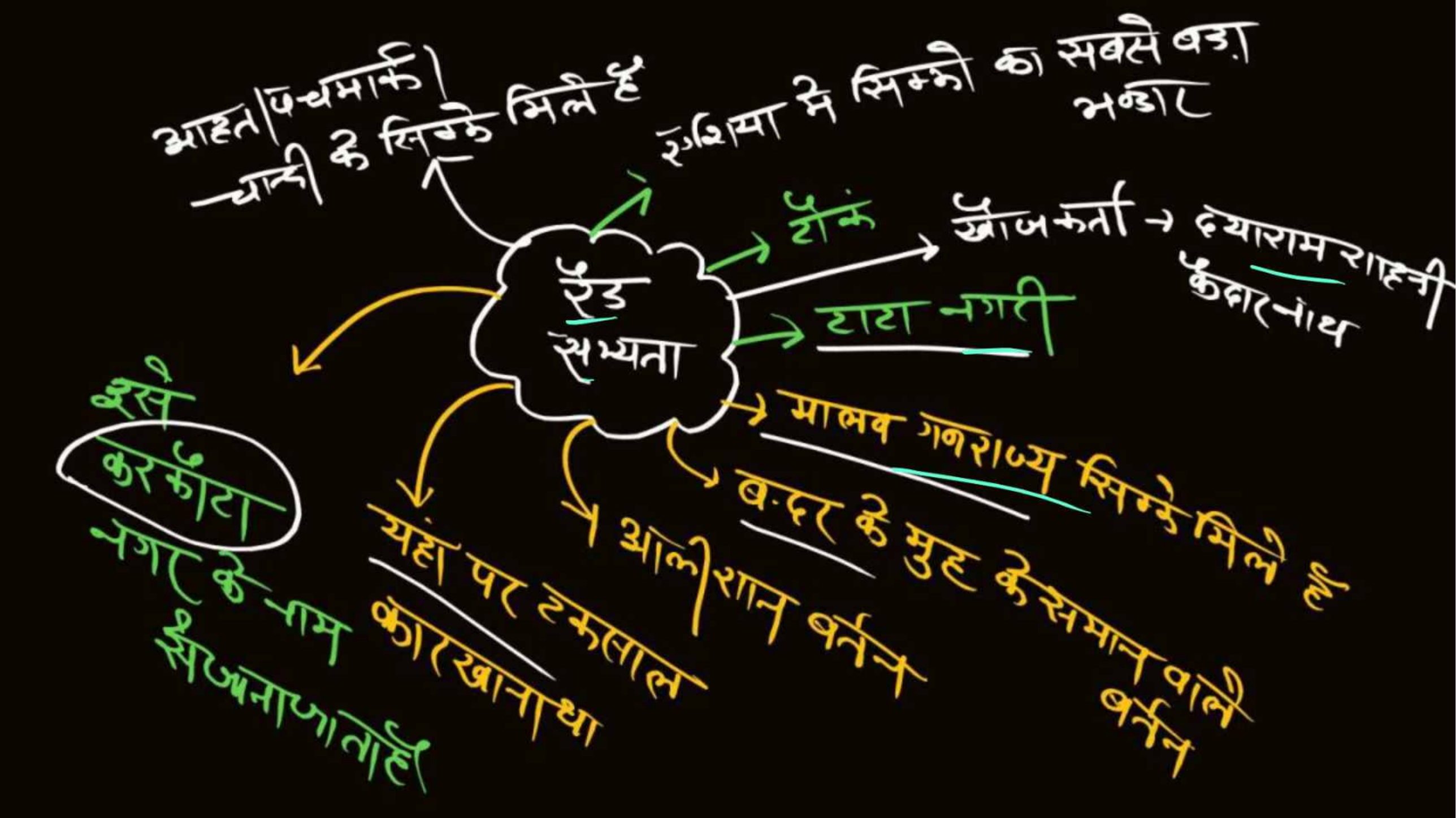

रैड सभ्यता
आहत/पंचमार्क/चान्दी के सिक्के मिले हैं
एशिया में सिक्कों का सबसे बड़ा भण्डार
टोंक
खोजकर्ता → दयाराम साहनी
केदारनाथ
टाटा नगरी
मालव गणराज्य सिक्के मिले हैं
बन्दर के मुँह के समान वाली बर्तन
आलीशान बर्तन
यहाँ पर टकसाल कारखाना था
इसे करकोटा नगर के नाम से जाना जाता है

बयाना → भरतपुर

→ यहा गुप्तकालीन सिक्के मिले है।

→ 623 गुप्त कालीन सिक्के मिले है।

→ हल्लनपुरा गावं : स्वर्ण निधि के भण्डार मिले है।

मण्डोर → औधपुर

→ गुर्जर प्रतिहार कालीन सिक्के मिले है।

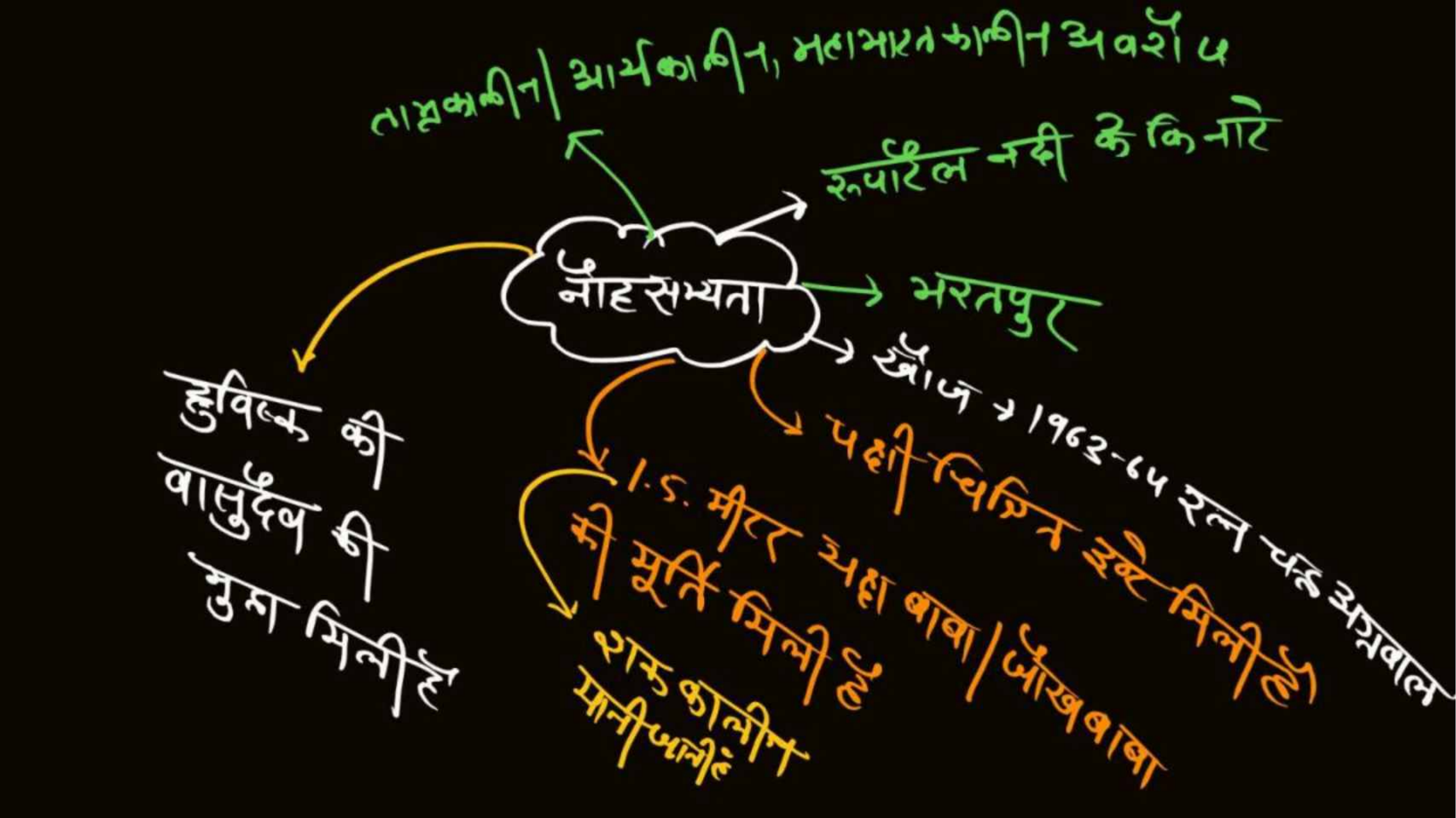

नोह सभ्यता

ताम्रकालीन/आर्यकालीन, महाभारत कालीन अवशेष

रूपारेल नदी के किनारे

भरतपुर

खोज → 1963-65 रतन चंद्र अग्रवाल

पक्षी-चित्रित ईंटें मिली हैं

1.5 मीटर यक्ष बाबा/जाखबाबा की मूर्ति मिली है

शुङ्गकालीन मानी जाती है

हुविष्क की वासुदेव की मुद्रा मिली है